This question paper contains **4+1** printed pages]

अनुक्रमांक | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **1014**

Unique Paper Code : **205282** **D**

Name of the Paper : **Paper–CP-2.5–Hindi Language (B)**

प्रश्न-पत्र–CP-2.5–हिंदी भाषा (ख)

Name of the Course : **B.Com. (Hons.)**

Semester : **II**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. संपर्क भाषा से क्या अभिप्राय है ? स्पष्ट कीजिए। 3

अथवा

बैंक में खाता खुलवाने के लिए प्रबंधक को आवेदन-पत्र लिखिए।

2. खड़ी बोली हिंदी का सामान्य परिचय दीजिए। 3

अथवा

हिंदी की प्रमुख बोलियों के नाम लिखिए।

P.T.O.

3. (क) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं **पाँच** के शुद्ध रूप लिखिए 5

मीठाइ, कठनाई, सीतल, वायू, जिवन, सुरज़, चीड़ीया।

(ख) किन्हीं **पाँच** के शुद्ध रूप लिखिए : 5

(*i*) लड़का ने आम खाया।

(*ii*) मेरे को जाना है।

(*iii*) उसको सिर पर दर्द है।

(*iv*) हम पढ़ता हूँ।

(*v*) अब मेरा बात मान लो।

(*vi*) एक फूलों की माला लाओ।

(*vii*) मैं पत्र लिखता है।

4. किन्हीं **पाँच** मुहावरों और लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए : 5

चोली-दामन का साथ, एक पंथ दो काज, थाली का बैंगन, खिचड़ी पकाना

अंगूर खट्टे हैं, नेकी कर दरिया में डाल, चिराग तले अंधेरा,

नौ दो ग्यारह होना, लोहे के चने चबाना, अँगूठा दिखाना।

5. 'पंचवटी' का कथा-सार लिखिए। 12

अथवा

'पंचवटी' के आधार पर सीता का चरित्र-चित्रण कीजिए।

6. 'रक्षाबंधन' नाटक में लेखक ने क्या संदेश दिया है ? स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

कर्मवती के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

7. 'कर्मभूमि' उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

सुखदा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

8. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

(क) मैं मनुष्यता को सुरत्व की
जननी भी कह सकता हूँ,
किन्तु पतित को पशु कहना भी
कभी नहीं सह सकता हूँ।

अथवा

नारी के जिस भव्य-भाव का
साभिमान भाषी हूँ मैं,
उसे नरों में भी पाने का
उत्सुक अभिलाषी हूँ मैं। 6

(ख) इल्मी बहस दूसरी चीज़ है, उस पर अमल करना दूसरी चीज़ है। बग़ावत पर इल्मी बहस कीजिए, लोग शौक से सुनेंगे। बग़ावत करने के लिए तलवार उठाइए और आप सारी सोसाइटी के दुश्मन हो जाएँगे। इल्मी बहस से किसी को चोट नहीं लगती। बग़ावत से गरदनें कटती हैं।

अथवा

हम सबका भाग्य एक ही स्याही से लिखा गया है। अब मेवाड़ में रह कर ही क्या करेंगे ? राजाओं की लड़ाई में गरीब क्यों पिसें ? कोई राजा हो हमारी बला से, हम तो सदा गरीब ही रहेंगे। 6

(ग) प्रेम हमारे स्वार्थ का सर्वनाश भले ही करे, पर यदि कर्त्तव्य के पथ पर, बलिदान के पथ पर, जाने वाले वह एक क्षण भी विलग रखे, तो उसका गला घोटना ही पड़ेगा। वह प्रेम नहीं, वासना है, मोह है।

अथवा

केवल नक्शे की लकीरें देखकर ही तो देश पर प्राण नहीं दिए जा सकते, तुम्हीं ने तो राखी के धागों द्वारा इन लकीरों का महत्त्व समझाया है। जिस प्रकार इन धागों में असीम स्नेह, ममत्व, वेदना और आशीर्वाद भरा है, उसी प्रकार उन लकीरों में भी है। ये धागे उन लकीरों के प्रत्यक्ष प्रतीक हैं। 6